भरत काल का संगीत :-

भारतीय संगीत के इतिहास में भरतकालीन संगीत वैदिक काल के बाद भारतीय संगीत का आधार माना जाता है। इसी काल में लिखित नाट्य शास्त्र उपलब्ध वह ग्रंथ है जिसमें सर्वप्रथम भारतीय संगीत के सिद्धांत का वैज्ञानिक अध्ययन है। किया गया है। नाट्य शास्त्र का संकलन पहली से छठी शताब्दी के बीच हुआ है नाट्यशास्त्र मूलत: नाटक पर लिखा गया है नाटक में संगीत

भरत ने इस ग्रंथ में संगीत संबन्धी उन सभी का मूल रूप से वर्णन किया है। इस दृष्टि से नाट्यशास्त्र के 28वें से 33वें अध्याय तक संगीत के श्रुति, स्वर, ग्राम, मुर्च्छना, जाति, वर्ण, अलंकार, गीति, वादी वाद्य, नृत्य, स्वर संवाद, स्वरांतर, जातियों के दस लक्षण आदि बातों पर ~~विविध~~ विस्तृत रूप से चर्चा किया है यह तो निश्चित है नाट्यशास्त्र संगीत का मूल ग्रंथ नहीं होने पर भी आजतक भारतीय संगीत के सभी तत्वो का स्पष्टीकरण नाट्य शास्त्र के आधार पर होता है भरत ने नाट्य शास्त्र में अपने पूर्व में संगीताचार्य,

ततील आदि के नामों का उल्लेख किया है परन्तु यह अत्यन्त दुख की

भरत ने स्वर की अपेक्षा न्यूनतम ~~ध्वनी~~ ध्वनि अंश जिसको कानो के द्वारा अलग-अलग सुनकर पहचाना जा सके श्रुति कहा —
श्रुति भति इति श्रुति।
जिसकी संख्या भरत ने २२ निर्धारित की। तथा इन्ही २२ श्रुतियों मे सात स्वरों की स्थापना कि है तथा स्वरों के प्रकार बताये — चतुश्रुतिक, त्रिश्रुतिक, द्विश्रुतिक अर्थात चार श्रुति वाला।

सा, स्वर बनने में चार श्रुतिया
रे, स्वर बनने में तीन श्रुतियाँ
ग, स्वर बनने मे दो श्रुतियाँ
म, स्वर बनने मे चार श्रुतियाँ
प, स्वर बनने मे चार श्रुतियाँ
ध, स्वर बनने मे तीन श्रुतियाँ
नी, स्वर बनने में दो श्रुतिया

भरत ने श्रुतियों के तीन प्रकार बताये।
(i) महति श्रुति, (ii) उपमहति श्रुति, (iii) प्रमाण श्रुति।

स्वर के बाद भरत ने ग्राम का लक्षण बताया। जिसमें निर्धारित श्रुतियो पर आधारित सात स्वरों की स्थापना को ग्राम कहा। जिससे विभिन्न रस भाव उत्पन्न करने वाली मुर्च्छनाओ की उत्पत्ति हो भरत ने षड्ज मध्यम गांधार